जल जीवन मिशन में ट्रायल रन को लेकर ऊंहापोह की स्थिति

शासन के आदेशों की अवहेलना कर रहे ठेकेदार

नवभारत न्यूज

पन्ना, 04 सितंबर। दिशा निर्देशों के अनुसार पूर्ण हो चुकी एकल नल जल योजनाओं को पंचायतों को हस्तान्तरित करने के पूर्व तीन महीने तक ठेकेदारों के द्वारा ट्रायलरन करवाने का प्रावधान है। इस दौरान तीन महीने तक ट्रायलरन के दौरान सफलतापूर्वक सभी वांछित लक्ष्यों को पूर्ण करने के उपरान्त ही ग्राम पेयजल स्वच्छता समिति को योजना के क्रियान्वयन एवं संधारण हेतु स्थान्तरण किया जाना है।

इस संबंध में पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग ने अक्टूबर 2025 को अपनाई जाने वाले प्रक्रिया एवं सावधानियों के संबंध में दिशा निर्देश जारी किये हैं। किन्तु ऐसा लगता है कि पीएचई विभाग के अधिकारी एवं ठेकेदारों के द्वारा जारी दिशा निर्देशों का अभी तक पालन नहीं किया जा रहा है।

समारोहपूर्वक होगा हस्तान्तरण:- ट्रायल रन का प्रमाण पत्र जारी होने के बाद निर्धारित प्रपत्र में जानकारी मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत को दी जायेगी। जहां सीईओ जिला पंचायत द्वारा सीईओ जनपद को सूचित कर समारोहपूर्वक योजना के हस्तान्तरण की कार्रवाई की जायेगी। जहां इस अवसर पर पुन: ग्रामसभा का आयोजन होगा। इस अवसर पर एक मात्र एजेंण्डा नलजल योजना का रखा जायेगा। इस अवसर पर प्रभारीमंत्री, सांसद, विधायक, जिला पंचायत अध्यक्ष, जनपद अध्यक्ष को आमंत्रित किया जायेगा। सभी जनप्रतिनिधि एवं पदाधिकारी ग्रामसभा के साक्षी होगे। समारोह में उपस्थित कनेक्शन धारियों का भी पक्ष सुना जायेगा। यदि इस अवसर पर योजना की कमियों को बताया जाता हे तो उसे लेखबद्ध कर ठेकेदार के माध्यम से योजना की कमियों को पूरा करवाया जायेगा। इस तरह से सभी कमियां ठीक हो जाने के बाद जारी प्रमाण पत्र में सीईओ जनपर अपने काउन्टर साईन करेंगे। इस प्रकार समस्त पूर्तियां होने के बाद ही योजनाओं का हस्तान्तरण पंचायतों को किया जायेगा।

कई अपूर्ण योजनाओं को भी कर दिया गया हस्तान्तरित

बताया गया है कि कई ऐसी योजनाओं को भी पूर्व में पंचायतों को हस्तान्तरित कर दिया गया जो अपूर्ण स्थिति में थी। जिनका ट्रायलरन पूरा ही नहीं किया गया था अथवा ट्रायलरन के नाम पर कागजी खानापूर्ति की गई थी। लिहाजा ऐसी योजनाओं के संचालन एवं संधारण में कई परेशानियां सामने आई। कई ठेकेदार योजनाओं को अधूरा छोड़कर भाग चुके हैं तो कई ठेकेदार जिन्हें करोड़ों के भुगतान प्राप्त हो चुके है वे अपूर्ण कार्यो को पूर्ण करने के लिये ही तैयार नहीं हैं। लिहाजा पीएचई विभाग के लिये ट्रायलरन की चुनौती एक अग्निपरीक्षा की तरह है।

इस तरह प्रक्रिया निर्धारित

एकल नल जल योजनाओं के हस्तान्तरण के संबंध में जो प्रक्रिया निर्धारित की गई है उसमें कहा गया है कि अनुबंधित ठेकेदारों द्वारा नियमों एवं शर्तो के अनुसार सभी औपचारिकताओ को पूर्ण करने के दौरान जब ट्रायलरन शुरू किया जायेगा तो इसकी जानकारी पीएचई विभाग को जनपद व जिला पंचायत को देनी होगी। इसके साथ ही ग्राम जल स्वच्छता समिति के अध्यक्ष एवं सदस्यों के समक्ष शुरू करना होगा। ट्रायलरन के दूसरे माह संबंधित ग्राम में एक ग्रामसभा का आयोजन करना होगा। इस तरह की ग्रामसभा स्थानीय जनप्रतिनिधि जनपद सदस्य, अध्यक्ष/उपाध्यक्ष, जिला पंचायत सदस्य, जनपद सीईओ की उपस्थिति में आयोजित की जायेगी। जहां योजना के समस्त पहलुओं पर चर्चा की जायेगी। योजना के संचालन में पाई जाने वाले कमियों को लेखबद्ध किया जायेगा। जिसका सुधार ठेकेदार को ट्रायलरन की अवधि में ही करना अनिवार्य होगा। यदि ठेकेदार ट्रायलरन की अवधि में उन कमियों को ठीक नही करता तो ट्रायलरन की अवधि तब तक जारी रहेगी जब तक कमियों को दूर नहीं किया जाता।

अंधेरे रास्तों पर टॉर्च बनेगी सर्पदंश से सुरक्षा की साथी

गांवों में वितरित की गई टॉर्च

नवभारत न्यूज

पन्ना, 04 सितंबर। दक्षिण पन्ना वनमंडल द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में सर्पदंश की रोकथाम के लिए टॉर्च वितरण एवं जन-जागरूकता अभियान व्यापक स्तर पर चलाया जा रहा है। वन क्षेत्रों से लगे गांवों में रात के समय खेत, खलिहान और घर के आसपास आवाजाही के दौरान कम रोशनी के कारण सांप दिखाई नहीं देने से अनजाने में उसके पास पहुंचने या उस पर पैर पड़ने का जोखिम रहता है।

टॉर्च के नियमित उपयोग से ग्रामीण रास्ते एवं आसपास के अंधेरे स्थानों को पहले देख सकते हैं और सांप से आकस्मिक संपर्क से बच सकते हैं। इसी उद्देश्य से वन सुरक्षा एवं ग्राम वन समितियों के सदस्यों, सुरक्षा श्रमिकों, महिलाओं एवं जरूरतमंद ग्रामीणों को टॉर्च वितरित की जा रही हैं। रैपुरा परिक्षेत्र में वन सुरक्षा समिति बड़ागांव, गंज एवं सगौनी के साथ ग्राम वन समिति सुर्रा-बघनरवा में टॉर्च वितरित की गईं। मोहन्द्रा परिक्षेत्र में टिकुरी, रमपुरा, मोहन्द्रा, दीनपुरा, फतेहपुर, जमुनहा, मोतीडोल, लाखनचोरी एवं चुनगुना सहित विभिन्न ग्राम वन समितियों में टॉर्च वितरण किया गया। पवई परिक्षेत्र की ग्राम वन समिति हड़ा में भी वनरक्षक कपिल वर्मा द्वारा ग्रामीणों को टॉर्च वितरित की गईं। कल्दा परिक्षेत्र की ग्राम वन समिति जुर्सिहा में वनमंडलाधिकारी अनुपम शर्मा द्वारा ग्रामीणों के साथ बैठक एवं संवाद किया गया। वन एवं वन्यजीव संरक्षण, मानव-वन्यजीव संघर्ष तथा प्रस्तावित कल्दा कंजर्वेशन रिजर्व से जुड़ी भ्रांतियों एवं शंकाओं पर ग्रामीणों से चर्चा की गई। इस दौरान सर्पदंश से बचाव के लिए टॉर्च एवं मच्छरदानियां भी वितरित की गईं। कार्यक्रम के अंत में वनमंडलाधिकारी ने ग्रामीणों के साथ बैठकर भोजन किया। शाहनगर परिक्षेत्र में महेबा-ठेपा, पौसी, बिहरिया, मरहा, कुनिया-महुआखेड़ा, लमतरा-टोला-बीजाखेड़ा एवं अतरहाई सहित विभिन्न गांवों में अभियान चलाया गया। महिलाओं, समिति सदस्यों एवं सुरक्षा श्रमिकों को टॉर्च देकर रात में घर से बाहर अथवा खेतों की ओर जाते समय उनका उपयोग करने के लिए प्रेरित किया गया।

ककरहटी से नौ जुआरी गिरफ्तार

नवभारत न्यूज

पन्ना, 04 सितंबर। जिला पन्ना के अंतर्गत पांडे हार ककरहटी के जंगलों में चल रहे जुआ फड़ पर देवेन्द्रनगर पुलिस ने बड़ी कार्रवाई करते हुए रंगे हाथों 9 आरोपियों को गिरफ्तार किया है।

पुलिस अधीक्षक पन्ना श्रीमती निवेदिता नायडू के निर्देशन, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्रीमती वंदना सिंह और एसडीओपी पन्ना श्री एस.पी. सिंह बघेल के मार्गदर्शन में चलाए जा रहे अपराध नियंत्रण अभियान के तहत यह सफलता मिली है। थाना प्रभारी देवेन्द्रनगर उप निरीक्षक संतोष सिंह यादव की अगुवाई में पुलिस टीम ने जंगल में घेराबंदी कर इस कार्रवाई को अंजाम दिया। पुलिस को मुखबिर से सटीक सूचना मिली थी कि ककरहटी के जंगल में स्थित एक जानवर बांधने वाली दुगई के पास कुछ लोग भारी रकम का दांव लगाकर जुआ खेल रहे हैं। सूचना मिलते ही हरकत में आई पुलिस टीम ने मौके पर दबिश दी और दो अलग-अलग फड़ों पर ताश के पत्तों से जुआ खेल रहे 9 जुआरियों को धर दबोचा। पकड़े गए आरोपियों में ककरहटी निवासी फारुख मोहम्मद, मोहम्मद निजाम, अशरफ हुसैन, मोहम्मद मिस्टर उर्फ सानू, मोहम्मद सज्जाद, रामनरेश कोरी, अब्दुल गुलाम गोस और सलमान मोहम्मद शामिल हैं। इसके अलावा कुलगढ़ी जिला सतना निवासी सरार उद्दीन उर्फ मंजा को भी गिरफ्तार किया गया है। कार्रवाई के दौरान पुलिस ने फड़ से 14,700 रुपये नगद, 7 मोबाइल फोन, 52-52 पत्तों की ताश की गड्डियां और एक मोटरसाइकिल बरामद की है। जब्त की गई कुल सामग्री और वाहन की अनुमानित कीमत 1,39,700 रुपये बताई जा रही है।

डीलरों को 30 दिन तक 4 हजार क्विंटल स्टॉक की अनुमति

पन्ना, 04 सितंबर। मध्यप्रदेश में कोई भी डीलर 4 हजार क्विंटल से अधिक चीनी का स्टॉक नहीं रखेगा। साथ ही स्टॉक को 30 दिन से अधिक समय तक भंडारित भी नहीं करेगा। सभी डीलरों द्वारा भारत सरकार के खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण विभाग के पोर्टल पर स्टॉक की घोषणा को नियमित अद्यतन करना अनिवार्य होगा। इस संबंध में जरूरी कार्यवाही के निर्देश सभी कलेक्टर को दिए गए हैं। सरकारी खाते पर या राज्य सरकार या उसके द्वारा प्राधिकृत किसी प्राधिकारी द्वारा विशेष रूप से किसी डीलर के माध्यम से सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अधीन उचित मूल्य की दुकानों के माध्यम से वितरण के लिए स्टॉक के भंडारण पर यह सीमा लागू नहीं होगी।

मात्रा व रेट को लेकर मनमानी, उपभोक्ता के साथ लूट

नवभारत न्यूज

पन्ना, 04 सितंबर। बाजार में चाहे मण्डी हो या किराने की दुकान जहां भी उपभोक्ता सामग्री की बिक्री की जाती है वहां उपभोक्ता संरक्षण के नियमों व सिद्धांतों का पालन नहीं हो रहा है। किन्तु दुर्भाग्य का विषय है कि जहां उपभोक्ता के साथ मनमानी लूट हो रही है वहां प्रशासन की तरफ से कभी कोई कार्रवाई नहीं होती।

यही कारण है कि उपभोक्ता को इस महंगाई के दौर में कई तरह से लूटा जा रहा है। पिछले कुछ समय देखा जा रहा है कि बाजार में उपभोक्ता जब कोई सामग्री क्रय करने जाता है तो यदि क्रय की जाने वाली सामग्री की मात्रा कम है तो उसका रेट अलग लिया जाता है, किलो का रेट अलग लिया जाता है, आधा किलो की सामग्री का रेट अलग लिया जाता है और एक पाव व पचास सौ ग्राम का रेट अलग वसूल किया जाता है। हर सामग्री की एमआरपी जब निर्धारित है तो उपभोक्ता चाहे जिस मात्रा में सामग्री क्रय करे उसी हिसाब से उसका रेट लिया जाना चाहिये। किन्तु ऐसा नहीं होता। व्यापारी उपभोक्ता को लूटने के लिये कम मात्रा में क्रय की जाने वाली सामग्री का रेट मनमानी तरीके से कुछ न कुछ अधिक बढ़ाकर ले रहा है।

यह भी सही है कि एक लंबे समय से छोटे व कम मूल्य के सिक्कों को बाजार में न तो स्वीकार किया जाता और न ही इस विषय में कोई कार्रवाई ही की जा रही है। जो सिक्के अभी भी प्रचलन में हैं और आरबीआई की तरफ से बंद नहीं हुये हैं उन्हें बाजार में स्वीकार क्यों नहीं किया जाता। यही कारण है कि एक समय पर दस रूपये के सिक्कों को लेकर भी इतनी तेज अफवाह फैली थी कि उसे बाजार में अस्वीकार किया जाने लगा था। पचास पैसे एवं एक रूपये के सिक्के तो बाजार में प्रचलन में ही नहीं दिखते।

उनके स्थान पर यदि उपभोक्ता को व्यापारी से लेना होता है तो बदले वह कुछ न कुछ सामग्री प्रदान कर देता है। भले ही उपभोक्ता उसे नहीं लेना चाहता हो। इससे समझा जा सकता है कि बाजार में एक तरफ सिक्कों के प्रचलन को लेकर उपभोक्ता के साथ धोखाधड़ी हो रही है।

बच्चों को पढ़ाना छोड़ स्कूल में ही ताश खेल रहे थे शिक्षक

वीडियो वायरल होने पर शिक्षा विभाग ने जारी किया नोटिस

नवभारत न्यूज

पन्ना, 04 सितंबर। गुनौर तहसील के नचनौरा स्थित शासकीय हाईस्कूल का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद शिक्षा व्यवस्था और स्कूल में शिक्षकों की कार्यप्रणाली को लेकर सवाल खड़े हो गए हैं।

वायरल वीडियो में कथित तौर पर स्कूल परिसर में शिक्षक पढ़ाई कराने के बजाय ताश खेलते हुए दिखाई दे रहे हैं। वायरल वीडियो ने सरकारी स्कूलों में विद्यार्थियों की पढ़ाई, अनुशासन और शिक्षकों की जिम्मेदारी को लेकर बहस छेड़ दी है।

ग्रामीणों का कहना है कि स्कूलों में शिक्षक बच्चों के भविष्य को संवारने और उन्हें शिक्षा के साथ अनुशासन का पाठ पढ़ाने के लिए नियुक्त किए जाते हैं। ऐसे में यदि शिक्षण समय के दौरान स्कूल परिसर में ताश खेलने जैसी गतिविधियां होती हैं तो यह गंभीर विषय है और इसकी वास्तविक सच सामने आना जरूरी है। हालांकि वायरल वीडियो की सत्यता, वीडियो कब और किस परिस्थिति में बनाया गया तथा उसमें दिखाई दे रहे लोगों की पहचान की आधिकारिक पुष्टि अभी नहीं हुई है। इन सभी बिंदुओं का स्पष्ट खुलासा शिक्षा विभाग की जांच के बाद ही हो सकेगा। इसलिए वीडियो के आधार पर किसी व्यक्ति को दोषी ठहराने के बजाय पूरे मामले की निष्पक्ष जांच आवश्यक मानी जा रही है। जिससे पूरे मामले की सच्चाई सभी अभिभावकों सहित अन्य लोगों के सामने आ सके।

निगरानी व्यवस्था पर भी उठाए सवाल - इस घटनाक्रम ने केवल संबंधित शिक्षक की कार्यप्रणाली ही नहीं, बल्कि स्कूलों की निगरानी व्यवस्था पर भी सवाल खड़े किए हैं। क्या स्कूलों में शिक्षण कार्य नियमित रूप से हो रहा है या नहीं, इसकी निगरानी किस स्तर पर होती है। सोशल मीडिया पर वीडियो वायरल होने के बाद शिक्षा विभाग के जिम्मेदारों ने कार्रवाई के नाम पर खानापूर्ति करना शुरू कर दिया है। वीडियो वायरल होते ही प्रधानाध्यापक को नोटिस जारी कर तीन दिन में जवाब तलब किया गया है।

ग्रामीणों ने की जांच कराए जाने की मांग

मामला सामने आने के बाद स्थानीय लोगों ने शिक्षा विभाग से मांग की है कि सोशल मीडिया पर वायरल वीडियो की जांच करें और वीडियो में दिखाई दे रही परिस्थितियों की वास्तविकता का पता लगाएं। यदि जांच में वीडियो सही पाया जाता है और शिक्षण कार्य के दौरान इस तरह की गतिविधियों की पुष्टि होती है, तो संबंधित जिम्मेदारों के खिलाफ नियमानुसार कार्रवाई की जाए।

पुलिया टूटने से आवागमन हुआ बाधित

नवभारत न्यूज

अजयगढ़, 04 सितंबर। अजयगढ़-बांदा मार्ग से गडरपुर, बरियारपुर और रानीपुर सहित दर्जनों गांवों को जोड़ने वाले पक्के रास्ते पर स्थित पुलिया पिछले साल की बारिश में टूट गई थी, जिसे प्रशासनिक उपेक्षा के कारण अब तक नहीं बनाया जा सका है।

इस टूटी हुई पुलिया का खमियाजा क्षेत्र के कई गांवों के राहगीरों को भुगतना पड़ रहा है। पिछले वर्ष बरसात खत्म होने के बाद ग्रामीणों ने स्वयं पहल करते हुए बोरी में रेत भरकर अस्थाई व्यवस्था बनाई थी और जैसे-तैसे आवागमन चालू रखा था। इस वर्ष फिर से भारी वर्षा होने के कारण ग्रामीणों द्वारा बनाई गई वह अस्थाई पुलिया पानी के तेज बहाव में

बह गई। साल भर से पक्की पुलिया टूटी होने के बावजूद प्रशासन ने इसकी कोई सुध नहीं ली है, जबकि ग्रामीणों ने कई बार जिम्मेदार अधिकारियों, कर्मचारियों और जनप्रतिनिधियों को ज्ञापन देकर पुलिया निर्माण की गुहार लगाई। प्रशासन द्वारा कोई कारगर कदम न उठाए जाने से अब लोगों का गुस्सा और निराशा बढ़ती जा रही है। वर्तमान में टूटी हुई पुलिया से निकल पाना बेहद खतरनाक और नामुमकिन हो गया है।

मजबूरन राहगीर बगल के खेतों से होकर गुजर रहे हैं, जहाँ इस समय भारी कीचड़ जमा है। आए दिन दोपहिया वाहन चालक इस कीचड़ में फंसकर गिर रहे हैं और चोटिल हो रहे हैं, जिससे आवागमन में भारी असुविधा का सामना करना पड़ रहा है। स्थानीय ग्रामीणों ने प्रशासन से पुरजोर मांग की है कि गडरपुर-बरियारपुर मार्ग की इस पुलिया का निर्माण शीघ्र अति शीघ्र कराया जाए ताकि क्षेत्रवासियों को इस विकट समस्या से राहत मिल सके और यातायात सुगम हो सके।

उफान पर मिधासन नदी अस्पताल थाना और मुख्य बाजार जलमग्न

नवभारत न्यूज

अमानगंज (पन्ना) 4 सितम्बर। मूसलाधार बारिश के बाद उफान पर आई मिधासन नदी ने अमानगंज नगर में विकराल रूप धारण कर लिया है। नदी का जलस्तर तेजी से ब?ने के कारण पूरे अमानगंज में जलप्रलय जैसी स्थिति निर्मित हो गई है।

रिहायशी इलाकों और मुख्य बाजार में बाढ़ का पानी घुसने से स्थानीय निवासियों और व्यापारियों में भारी हड़कंप मचा हुआ है। नुकसान से बचने के लिए व्यापारी आनन-फानन में दुकानों से सामान निकालकर सुरक्षित स्थानों पर भेजने में जुटे हैं।

बाढ़ के व्यापक असर से शासकीय व्यवस्थाएं पूरी तरह प्रभावित हुई हैं-जलमग्न हुए शासकीय परिसर- अमानगंज थाना परिसर, शासकीय अस्पताल और स्थानीय नर्सरी पूरी तरह पानी में डूब चुके हैं। अस्पताल में पानी भरने से मरीजों और स्वास्थ्य कर्मियों को भारी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

यातायात ठप-पन्ना-अमानगंज मुख्य मार्ग पर कई फीट पानी भर जाने के कारण आवागमन पूरी तरह अवरुद्ध हो गया है। सड़क संपर्क टूटने से मार्ग के दोनों ओर वाहनों की लंबी कतारें लग गई हैं।

व्यावसायिक क्षेत्रों में अफरा-तफरी- निचले इलाकों के बाद अब मुख्य बाजार तक पानी पहुँचने की आशंका से पूरे नगर में भय का माहौल बना हुआ है।

राहत शिविरों में पहुंचे कलेक्टर और एसपी-आपदा की स्थिति को देखते हुए पन्ना कलेक्टर उषा परमार और पुलिस अधीक्षक (SP) ने अमानगंज पहुंचकर बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का जायजा लिया। प्रशासनिक अधिकारियों ने कन्या हाई स्कूल और बॉयज हाई स्कूल में बनाए गए राहत शिविरों का निरीक्षण कर विस्थापित लोगों के लिए रुकने, भोजन और दवाइयों की व्यवस्थाओं की समीक्षा की।

जलस्तर घटने की संभावना-फिलहाल बारिश थमने से प्रशासनिक तंत्र और स्थानीय नागरिकों ने राहत की सांस ली है। मिधासन नदी के जलस्तर में धीरे-धीरे कमी आने की संभावना जताई जा रही है, हालांकि प्रशासन अभी भी पूरी तरह अलर्ट मोड पर है और स्थिति पर लगातार नजर रखी जा रही है।

पिता को बेटी ने दी मुखाग्नि देखकर नम हुईं आंखें

नवभारत न्यूज

पवई 4 सितम्बर। नगर परिषद पवई में पदस्थ अंजली गौतम के पिता अरविंद गौतम (54) वर्ष निवासी ग्राम महेबा तहसील गुनौर का गुरुवार की देर रात बिड़ला हॉस्पिटल में इलाज के दौरान निधन हो गया उनके निधन की खबर से परिवार सहित पूरे गांव में शोक की लहर है।

उनका अंतिम संस्कार प्रयागराज में किया गया। जानकारी अनुसार अरविंद गौतम की तीन बेटियां हैं लक्ष्मी, अंजली और राशि कोई बेटा न होने पर मझली बेटी अंजली ने अपने पिता को मुखाग्नि दी। बेटी द्वारा पिता को मुखाग्नि देने का यह भावुक दृश्य देखकर वहां मौजूद हर व्यक्ति की आंखें नम हो गईं। स्थानीय लोगों ने कहा कि अंजली ने समाज में एक मिसाल पेश की है कि बेटियां भी बेटों से कम नहीं होतीं। इस कठिन समय में उन्होंने हिम्मत और साहस का परिचय दिया। ईश्वर दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करे और परिवार को यह दुख सहने की शक्ति दे।

बारिश का कहर, उफानते नालों में बहने से दो की मौत, 14 वर्षीय मासूम लापता

नवभारत न्यूज

पन्ना, 04 सितंबर। जिले में हो रही मूसलाधार बारिश अब जानलेवा साबित होने लगी है। गुरुवार को अलग-अलग क्षेत्रों में उफान पर आए नालों को पार करने और पास से गुजरने के दौरान तीन लोग तेज बहाव में बह गए। इन हादसों में एक युवक और एक मासूम की मौत हो गई, जबकि 14 साल का एक अन्य बालक अभी भी लापता है।

पहली घटना पन्ना कोतवाली थाना क्षेत्र की ग्राम पंचायत तिलगवां के जमुनहाई गांव में कटरा बांध के पास हुई। यहाँ 32 वर्षीय अर्जुन आदिवासी बांध के नीचे ओवरफ्लो हो रहे पानी के समीप से गुजर रहा था, तभी अचानक वह पानी से भरे गड्ढे में गिरकर बह गया। मौके पर मौजूद लोगों ने उसे नाले से बाहर निकालकर जिला अस्पताल पहुंचाया, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। दूसरी घटना गुनौर थाना क्षेत्र के ग्राम बसौरा की है, जहाँ सुबह करीब 10 बजे 8 वर्षीय मासूम अमन चैधरी तेज बहाव वाले नाले की चपेट में आ गया। परिजनों की सूचना पर पहुंची एसडीआरएफ की टीम ने सर्चिंग ऑपरेशन चलाया और बालक के शव को झाड़ियों से बाहर निकाला। तीसरी घटना देवेंद्रनगर थाना क्षेत्र (ककरहटी चैकी) के ग्राम गढ़ीपडरिया में मंदिर घाट के पास हुई। यहाँ वृंदावन बांध का नाला उफान पर होने के कारण दोपहर करीब 12 बजे 14 वर्षीय दिव्यांशु शुक्ला तेज बहाव में बहकर लापता हो गया। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस और एसडीआरएफ की टीम मौके पर पहुंची और लापता बालक की तलाश के लिए सर्चिंग ऑपरेशन के बाद आज उसका शव बरामद कर लिया गया। कलेक्टर एवं पुलिस अधीक्षक ने भारी बारिश और जलभराव को देखते हुए आम जनता से एहतियात बरतने और उफानते नालों व जलस्रोतों से दूर रहने की अपील की है।

बाढ़ प्रभावित गांवों में पुलिस की पैनी नजर

एसपी ने भटनवारा-डोभा पहुंचकर लिया जायजा - जिले में लगातार हो रही भारी बारिश के बीच बाढ़ एवं जलभराव की स्थिति को देखते हुए पुलिस प्रशासन सक्रिय है। पुलिस अधीक्षक पन्ना निवेदिता नायडू और अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक वंदना सिंह ने गुनौर क्षेत्र के बाढ़ प्रभावित ग्राम भटनवारा एवं डोभा का दौरा कर हालात का जायजा लिया। अधिकारियों ने प्रभावित ग्रामीणों से चर्चा कर उनकी समस्याएं और जरूरतें जानीं तथा हर संभव सहायता का भरोसा दिलाया। पुलिस अमले को प्रभावित क्षेत्रों में सतर्क रहने, ग्रामीणों की सुरक्षा सुनिश्चित करने और आवश्यकता पड़ने पर तत्काल राहत एवं बचाव कार्य में सहयोग के निर्देश दिए गए।

श्यामगिरी के घने जंगलों में मिला दुर्लभ औषधीय वृक्ष 'शल्यकर्णी'

नवभारत न्यूज

पन्ना, 04 सितंबर। दक्षिण पन्ना वनमंडल के कल्दा वन परिक्षेत्र अंतर्गत श्यामगिरी के घने जंगलों में दुर्लभ औषधीय वृक्ष शल्यकर्णी की मौजूदगी सामने आई है। मध्य भारत में गंभीर रूप से संकटग्रस्त मानी जाने वाली इस प्रजाति का श्यामगिरी के प्राकृतिक जंगलों में पाया जाना दक्षिण पन्ना की समृद्ध जैवविविधता और क्षेत्र के संरक्षण महत्व को रेखांकित करता है।

अजय चैरसिया एवं वन विभाग में कार्यरत वनपाल अमित रैकवार द्वारा इस वृक्ष की तस्वीरें एवं संबंधित जानकारी साझा की, जिससे श्यामगिरी में इसकी उपस्थिति दर्ज हुई है। भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद के उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर द्वारा भी मध्यप्रदेश में इस प्रजाति के संरक्षण एवं प्रवर्धन पर विशेष शोध किया जा चुका है।

पारंपरिक औषधीय महत्व वाला दुर्लभ वृक्ष - शल्यकर्णी क्पससमदपंबमंम कुल का मध्यम आकार का पर्णपाती वृक्ष है। इसे विभिन्न क्षेत्रों में कल्ई, अग्गई, करकट, सुआरुख, करमल आदि स्थानीय नामों से भी जाना जाता है। मध्य भारत के विभिन्न जनजातीय एवं स्थानीय समुदायों के पारंपरिक ज्ञान में इसके विभिन्न भागों के औषधीय उपयोग दर्ज किए गए हैं। प्राकृतिक पुनर्जनन

भी है बड़ी चुनौती - शल्यकर्णी के संरक्षण की प्रमुख चुनौतियों में इसका कठिन प्राकृतिक पुनर्जनन शामिल है।

इसके बीजों की अंकुरण क्षमता सामान्य परिस्थितियों में काफी कम पाई गई है। मध्यप्रदेश में किए गए अनुसंधानों में भी इसके बीजों के अंकुरण तथा पौध तैयार करने में कठिनाई दर्ज की गई है। इसी कारण इसके प्राकृतिक रूप से नए पौधों की संख्या बढ़ना आसान नहीं होता और मौजूदा वृक्षों एवं उनके प्राकृतिक आवास का संरक्षण विशेष महत्व रखता है।

दुर्लभ वनौषधियों और वनस्पतियों का भंडार है श्यामगिरी

श्यामगिरी क्षेत्र अपनी घनी वनस्पतियों, पहाड़ी भू-दृश्य, प्राकृतिक जलस्रोतों और समृद्ध जैवविविधता के लिए विशिष्ट पहचान रखता है। यहां अनेक औषधीय एवं पारिस्थितिक रूप से महत्वपूर्ण वनस्पतियां प्राकृतिक रूप से पाई जाती हैं। इनमें सतावर, वाराही कंद, सफेद मूसली, काली मूसली, कलिहारी, केवकंद, जंगल प्याज, खस, महुआ, हर्र, बहेड़ा, आंवला, अर्जुन, ब्राह्मी, पुनर्नवा, धवई, हरसिंगार और नागरमोथा जैसी वनस्पतियां प्रमुख हैं। श्यामगिरी के घने जंगल, पहाड़ियां, घाटियां, वनस्पतियां और प्राकृतिक जलस्रोत मिलकर एक विशिष्ट पारिस्थितिक तंत्र का निर्माण करते हैं। अपनी प्राकृतिक सुंदरता और जैवविविधता के कारण प्रकृति प्रेमियों द्वारा इस क्षेत्र को 'बुंदेलखंड की पचमढ़ी' भी कहा जाता है। वनमंडल अधिकारी के अनुसार श्यामगिरी का जंगल केवल हरियाली का विस्तार नहीं, बल्कि एक जीवंत प्राकृतिक धरोहर है, जहां दुर्लभ वनस्पतियां, औषधीय प्रजातियां और जैवविविधता की अनेक महत्वपूर्ण कड़ियां आज भी सुरक्षित हैं।